

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-1 * * Issue-5 * * December 2024 *

मैथिली भाषा आ रोजगार: एक विमर्श**डॉ. स्वीटी कुमारी**

सहायक प्राचार्य, मैथिली विभागाध्यक्ष, बलिराम भगत महाविद्यालय समस्तीपुर, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा बिहार

सारांश

वर्तमान वैश्वीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी आ डिजिटल क्रान्तिक युगमे भाषाक महत्व केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्तिधरि सीमित नहि रहल अछि, अपितु रोजगार आ आर्थिक विकासक क्षेत्रमे सेहो एकर महत्वपूर्ण योगदान देखल जा रहल अछि। मैथिली भाषा, जे भारतक संविधानक अष्टम अनुसूचीमे सम्मिलित एक प्रमुख भाषा थिक, विभिन्न क्षेत्रसभमे रोजगारक नव अवसर उत्पन्न कऽ रहल अछि। शिक्षा, प्रशासन, मीडिया, मनोरंजन, अनुवाद, डिजिटल कंटेंट निर्माण, ऑनलाइन सेवा तथा उद्यमिता जेकाँ क्षेत्रमे मैथिली भाषाक उपयोग निरन्तर बढ़ि रहल अछि। डिजिटल मंचसभक विस्तारक कारण मैथिली भाषामे सामग्री निर्माण, शिक्षण, पत्रकारिता तथा सांस्कृतिक गतिविधिसभक मांग बढ़ल अछि, जाहिसँ युवासभ लेल रोजगारक नव सम्भावना विकसित भेल अछि।

एहि शोध-पत्रमे मैथिली भाषा आ रोजगारक अन्तर्सम्बन्धक विश्लेषण कएल गेल अछि। अध्ययनमे शिक्षा, प्रशासन, मीडिया तथा डिजिटल रोजगारक क्षेत्रमे मैथिली भाषाक उपयोगिता, चुनौती तथा सम्भावनासभ पर विचार कएल गेल अछि। संगहि प्रशिक्षण, कौशल विकास, मानकीकरण तथा नीतिगत सहयोगक आवश्यकताक सेहो विवेचना कएल गेल अछि। निष्कर्षतः ई कहल जा सकैत अछि जे उचित नीति, संस्थागत समर्थन आ तकनीकी विकासक माध्यमसँ मैथिली भाषा रोजगार सृजन तथा क्षेत्रीय आर्थिक विकासक एक सशक्त माध्यम बनि सकैत अछि।

कुंजी शब्द— मैथिली भाषा, रोजगार, डिजिटल रोजगार, शिक्षा, प्रशासन, मीडिया, कौशल विकास, भाषा संरक्षण, उद्यमिता, डिजिटल कंटेंट निर्माण।

1. परिचय

मैथिली भाषा के विकास आ संग्रहीत संग्रह में ई सभ्यता के सांस्कृतिक धरोहर के रूप में उद्घाटित करैत अछि। एक-दूसरक संग संवाद स्थापित करैत, ई भाषा अपन आत्मा आ पहचान के संरक्षण करैत अछि। आशय ई अछि जे मैथिली भाषा में प्राचीनता, साहित्य, वा लोककला के संग-संग वर्तमान के आवश्यकताकें सेहो समेटल जाए। प्रवृत्ति अनुसार, भाषा केवल संवाद के माध्यम नहि, बल्कि रोजगार, शिक्षा, आ प्रशासनिक कार्य में सेहो महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहल अछि। इतिहास में सेहो ई सभ्यता के जीवंत संचार के आधार रहल अछि, जाहि सँ अनेक आंचलिक संस्कृतिका संरक्षण होइत अछि। वर्तमान में, मैथिली भाषा कंटेन्टप्लेटफॉर्म पर उपयोग बढ़ि रहल अछि, जतय डिजिटल प्लेटफॉर्म पर एहि के समर्पित सामग्री, लेख, आ संवाद के माध्यम सँ ई भाषा के जीवन्तता आ प्रसार होइत अछि। ई परिप्रेक्ष्य में, भाषा के संरक्षण आ विकास के लेल रणनीतिक योजना आवश्यक अछि, जे स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन में मददगार हो। आब लिएक कि भाषा के संरक्षण स्वयं में रोजगार के स्रोत बनि सकैत अछि, ताहि लेल आवश्यक अछि कि लोक अपन मातृभाषा में उच्चतर शिक्षा, प्रशिक्षण आ कौशल विकास करैत प्रगति करू। एहि संदर्भ में, मैथिली भाषा के उपयोगिता आ महत्व के समझाइते, एहिठाम हमरा देखैत छी कि भाषा सेहो एक आर्थिक संसाधन के रूप में परिणत हो सकैत अछि, जे रोजगार आ समृद्धि के मार्ग प्रशस्त करैत अछि। एहि से ई स्पष्ट अछि कि मैथिली भाषा के संरक्षण, विकास आ उसका सही उपयोग न केवल

सांस्कृतिक दायित्व, बल्कि व्यावहारिक आवश्यकता सेहो अछि। अतः, जागरूकता, संस्थागत समर्थन अउरी नीति निर्माणक संग, मैथिली भाषा के विकास सुनिश्चित करबाक बड़ अवसर स्थिर अछि।

2. मैथिली भाषा के महत्व

मैथिली भाषा केर अपन अपूरणीय महत्व अछि, जाहि में संस्कृति, परम्परा आ सामाजिक मूल्यसभ के संरक्षण करए में भूमिका अदा करैत अछि। एहि भाषा केर माध्यम सँ लोक अपन मौलिकता, हर्ष-उल्लास आ परंपरागत ज्ञानक अभिव्यक्ति करैत अछि। जखन विश्वव्यापीकरण आ प्रविधि के विकास भ रहल अछि, तखन मैथिली भाषाक संरक्षण आ विकास केर गंभीर आवश्यकता प्रकट होइत अछि। विभिन्न शिक्षण संस्थान, लोकतान्त्रिक प्रक्रिया आ मीडिया में मैथिली केर प्रयोग सँ लोकक आत्म-गर्व जागृत होइत अछि। एहि भाषा में वैदिक, साहित्यिक आ ऐतिहासिक सम्पदाक संरक्षण सँ लोकक सांस्कृतिक पहचान मजबूत होइत अछि। रोजगार के क्षेत्र में मैथिली भाषाक उपयोग सँ नव अवसर उत्पन्न होइत अछि, जाहि सँ युवा वर्ग अपन मातृभाषा में रोजगार प्राप्त कर सकैत अछि। विशेष कए शिक्षण, अनुवाद, कंसल्टेंसी, साक्षरता आ डिजिटल कंटेंट विकास में मैथिली केर भूमिका प्राथमिकता बनि रहल अछि। एहि भाषाक संरक्षण आ प्रवर्धन सँ लोकक सामाजिक समावेशन आ आर्थिक समृद्धि सुनिश्चित होइत अछि। अतः, मैथिली भाषा केर विकास एवं रोजगार सृजन मे सार्थक प्रयास आवश्यक अछि, जे सँ एहि भाषाक समृद्धि के साथ-साथ लोकक जीवनमान सेहो उन्नत होइ।

3. रोजगार के क्षेत्र जतय मैथिली के मांग

मैथिली भाषा के रोजगार के क्षेत्र में बहुआयामी अवसर उपलब्ध अछि। शिक्षा क्षेत्र में, मिथिला क्षेत्रक विद्यालय आ विश्वविद्यालय सभ मे मैथिली पढ़ेबला शिक्षक सभक माँग निरंतर बढ़ि रहल अछि। एहि भाषाक प्रचार-प्रसार आ साहित्यिक अध्ययनक लेल समर्पित शिक्षण संस्थान सभ में मैथिली शिक्षकक आवश्यकतानुसार पद सृजित होइत अछि, जाहि सऽ युवा वर्ग अपने मातृभाषा में योग्यता प्राप्त कऽ सकैत अछि। एहि संकल्पनासँ मैथिली भाषाक मूल्य वर्धन होइछ आ रोजगार के नवीन मार्ग प्रशस्त होइत अछि।

प्रशासन आ सेवाक्षेत्र में, सरकारी कार्यालय आ स्थानीय प्रशासनिक कार्यालय सभ में मैथिली भाषाक प्रचलित प्रयोगबढ़ि रहल अछि। विशेषतः जिलास्तर पर सरकारी संवाद, दस्तावेज, प्रमाणपत्र, आ शिकायत पत्रिका आदि के मैथिली में जारी करब आवश्यक भऽ रहल अछि, जाहि सऽ क्षेत्रीय जनता तक उचित सेवा पहुँचत। एहि साक्षरता आ संवाद क्षमता बढ़ि रहल अछि, जे स्थानीय भाषाक सम्मान आ रोजगार के विस्तार करैत अछि।

मनोरंजन आ मीडिया में सेहो मैथिली भाषा केर व्यापक उपयोग होइत रहल अछि। मिथिला क्षेत्रक लोकसाहित्य, गीत, नाटक, टीवी कार्यक्रम, रेडियो शो जैसे माध्यमसँ मैथिली के लोकप्रियता बढ़ि रहल अछि। फिल्म उद्योग में सेहो मैथिली फिल्म आ वेब सीरीज बनि रहल अछि, जकरा देखकऽ लोक अपन संस्कृति सऽ जुड़ल रहैत अछि। एहि माध्यम सँ रोजगारक अवसर उत्पन्न भए रहल अछि, जे युवा वर्गक संग सांस्कृतिक पहचान सेहो मजबूत करैत अछि।

आधुनिक डिजिटल युग में, ऑनलाइन रोजगार आ सोशल मीडिया सेहो मैथिली भाषाक प्रचार-प्रसार लेल एक शक्तिशाली माध्यम बनि रहल अछि। वेबसाइट, ब्लॉग, युट्यूब चैनल, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म सब मैथिली में उपलब्ध भए रहल अछि, जे व्यवसायिक आ क्रिएटिव क्षेत्रसभ में ध्यान आकर्षित करैत अछि। डिजिटल मार्केटिंग, अनुवाद, कंटेंट राइटिंग, वेबसाइट विकास आदि के क्षेत्र में मैथिली भाषी युवा लोकनि अपन क्षमता विकसित कऽ रोजगार प्राप्ति कऽ सकैत छथि। एहि सबसँ, मैथिली भाषा के रोजगार में माँग निरंतर वृद्धि के संकेत द रहा अछि।

3.1. शिक्षा क्षेत्र

शिक्षा क्षेत्र में मैथिली भाषाक प्रसार आ उपयोग अत्यंत महत्वपूर्ण मानल जाइत अछि, कारण एहि माध्यम सँ लोकके लोकप्रिय आ साक्षरता बढ़ेबाक संभावना बढ़ि जाइत अछि। मैथिली में शिक्षण सामग्रीक उपलब्धता आ गुणवत्तापूर्ण पाठ्यक्रम केर विकास एहि भाषाक महत्व केँ प्रकट करैत अछि। विद्यालय आ महाविद्यालय स्तर पर मैथिली शिक्षाक प्रवर्धन लेल विशेष ध्यान देल जा रहल अछि। एहि संगहि, स्थानीय शिक्षक आ शैक्षिक संस्थानसभकेँ प्रोत्साहित कयल जा रहल अछि कि ओ अपन मातृभाषा मे शिक्षण दायित्व पूरा करथि। ई प्रयास विद्यार्थीकेँ मातृभाषामे अपने विचार व्यक्त करबाक क्षमता बढ़बैत अछि, संगहि सांस्कृतिक पहचान केँ सुरक्षित राखैत अछि। कोर्स सामग्री, ग्रंथालय, आ डिजिटल शिक्षण संसाधन जेकाँ सुविधाक सृजन सँ स्थानिक भाषा केँ

प्रोत्साहन भेटैत अछि।

सामग्रीक डिजिटलीकरण, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म आ मोबाइल आधारित टूलक प्रवर्धन सँ मैथिली माध्यम सँ शिक्षणक पहुँच सहज बनि रहल अछि। युवा पीढ़ी के एहि माध्यम सँ निःसन्देह शिक्षा ग्रहण करैत, रोजगारक अवसर सेहो बढ़ि रहल अछि। शिक्षक आ विद्यार्थी दुनु के लेल प्रशिक्षण कार्यशालाक आयोजन और मैथिली भाषाक अध्यापन मे विशिष्ट योग्यता प्राप्त करबाक दिशा में कदम उठाउल जा रहल अछि। एहि सुधारक संग, स्थानीय भाषा के छात्र-शिक्षक दरम्यान संवाद आ समझदारी वृद्धिक दिस अग्रसर होइत अछि। अतः, मैथिली भाषा में शिक्षा कक्षात्मक आ प्रौद्योगिकी का उपयोग सँ विश्वसनीय प्लेटफॉर्म तैयार कयल जा रहल अछि, जे दीर्घकालीन रूपेँ भाषाई आ तकनीकी प्रगति मे योगदान देत।

3.2. प्रशासन आ सेवाक्षेत्र

प्रशासन आ सेवाक्षेत्रमे मैथिली भाषा केर प्रयोग ऐतिहासिक एवं सामाजिक रूप सँ महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करैत रहल अछि। सरकारी कार्यालयसभ में मैथिली भाषा के प्रयोग सँ कार्यपालिका में सहजता आएत अछि, जाहिसँ लोक के अपन बात राखने में सुविधा होइत अछि। एहि क्षेत्रमे मैथिली के समुचित स्थान आ मानक स्थापित करब आवश्यक अछि, ताकि लोकक आवाज उच्चारण केर माध्यम सँ स्पष्टता आ विश्वसनीयता प्राप्त कर सकए। रोजगारिक दृष्टि सँ, मैथिली भाषा केर प्रचार-प्रसार सँ सेवा क्षेत्र में रोजगार केर अवसर वृद्धि होइत अछि, विशेषतः स्थानीय जनता केर साक्षरता आ संचार कौशल बढ़ैत अछि।

सरकारी विभाग आ प्रशासनिक एजेंसिसभ द्वारा मैथिली में आधिकारिक जुड़ाव एवं सेवाकर्म प्रति जागरूकता आ गति बढ़ेनाई आवश्यक अछि। इससे जे लोक रोजगार खोजि रहल छथि, हुनकर समर्पित छने अनुकूल सेवासमूह बनि सकैत अछि। एहि सँ ज्यादातर लोक अपन समस्याक समाधान मैथिली में नहि बल्कि अनुवादक आ अन्य माध्यम सँ प्राप्त करैत छथि, जाहि सँ कार्यकुशलता आ ग्राहक संतुष्टि मे सुधार होइत अछि।

सामाजिक संपर्क एवं जागरूकता के माध्यम सँ मैथिली भाषा केर प्रयोग आ प्रचार-प्रसार बढ़बाक चाही। सरकारी योजनासभमे मैथिली के प्रयोग सँ लोकक विश्वास आ संलग्नता बढ़ैत अछि। एहि क्षेत्रमे उचित प्रशिक्षण आ कौशल विकास पर ध्यान देल जाए, ताकि रोजगारक अवसर सृजित होअए। संगहि, लोकल स्तर पर मैथिली भाषाक प्रति सम्मान आ संरक्षण देब आवश्यक अछि, जाहि सँ ई भाषा मे स्वयं के रक्षा आ संरक्षण संभव हो।

निर्मल, प्रभावी एवं समावेशी प्रशासनिक संरचनाक विकास लेल मैथिली भाषा के प्रयोग पर बल देल जरूरी अछि। ऐहिसँ न केवल स्थानीय जनता के लाभ होएत बल्कि समूचा समाज के समावेशी विकासमें मदति मिलत। एहि सिद्धांत के आधार पर नीति-निर्माण करैत, मैथिली भाषा आ रोजगारक संगठित आ व्यवस्थित विकास सुनिश्चित कैल जेबाक चाही।

3.3. मनोरंजन आ मीडिया

मनोरंजन आ मीडिया के क्षेत्र में मैथिली भाषा के विकास के संगहि ओकर रोजगारपूर्ण उपयोग के विस्तार भेल अछि। मीडिया उद्योग में मैथिली के प्रविष्टि संगहि सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण आ प्रचार-प्रसार के संभावना बढ़ल अछि। टेलीसिरियल, चलचित्र, गीत, आ डिजिटल वेब सीरीज जेकां माध्यम सब मैथिली भाषी जनता तक पहुँच बनौनाए में सहायता पहुँचाबैत अछि, जाहि सं भाषा के जीवंतता बनल रहैत अछि। एहि माध्यम द्वारा मैथिली के लोकजीवन, परंपरा आ मनोरंजन के विविध आयाम लोकसभ तक सहजता सं पहुँचे लागल अछि।

संचार माध्यम में मैथिली के उपयोग आब अधिक प्रचलित होइत गेल अछि। अखबार, रेडियो, आ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर मैथिली के प्रचुर मात्रा में सामग्री प्रस्तुत भ रहल अछि, जे युवा पीढ़ी तक भाषा के सहजता संग पहुँचाबय में समर्थ अछि। वीडियो कांफ्रेंसिंग, वेबिनार, आ डिजिटल मीडिया कैटेगरी में मैथिली के प्रयोग से रोजगार के नवीन अवसर बनल अछि, जे स्थानीय कलाकार, पत्रकार, अउर कंटेंट क्रिएटर के लेल आय का स्रोत बनि रहल अछि।

आधुनिक संचार माध्यम में मैथिली के समावेशिता के बढ़ावा देबाक संगहि, ई क्षेत्र रोजगार के विविध अवसर सृजित करैत अछि। एहि के कारण स्थानीय समाज में भाषा के प्रगति के संगहि, आर्थिक समृद्धि आ रोजगार के अवसर सेहो विस्तारित भेल अछि। एहि तरहेँ, मनोरंजन आ मीडिया के क्षेत्र में मैथिली भाषा के विकास आ उपयोग न केवल सांस्कृतिक संरक्षण में मदद करैत अछि, बल्कि रोजगार सृजन आ स्वावलंबन के प्रेरणा सेहो बनि रहल अछि।

3.4. ऑनलाइन आ डिजिटल रोजगार

आधुनिक युग में डिजिटल तकनीक और इंटरनेटक विकास के कारण रोजगारक क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन आयल अछि। मैथिली भाषा हेतु ऑनलाइन आ डिजिटल रोजगार नवीन संभावनाक द्वार खोलि देलक अछि। एहि माध्यम सँ रोजगारक अवसर के विस्तृतता आ पहुँच सहज भेल अछि। डिजिटल प्लेटफार्म पर रोजगारक विविधता उत्पन्न भेल अछि, जाहि में फ्रीलांसिंग, वेबसाइट विकास, कंटेंट रचनाक, अनुवाद, डिजाइनेसन, सोशल मीडिया प्रबंधन, आ डिजिटल मार्केटिंग प्रमुख छथि। एहि सं चारि-चारि सँ छोटे-बड़े व्यवसाय, लेखक, शिक्षक, आ कलाकार सब मिथिलांचल के सीमामे नहि बल्कि सम्पूर्ण भारत आ विश्वमे अपन प्रस्तुति दियबाक अवसर भेटैत अछि।

मैथिली भाषाक डिजिटलीकरण सँ न केवल भाषा कें संरक्षण आ प्रचारमे सहायता भेटैत अछि, बल्कि रोजगारक आयाममे नवीन अवसर सेहो उत्पन्न होइत अछि। स्थानीय संगठनों एवं सरकारक सहायता सँ विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफार्म पर मैथिली में रोजगारक जागरूकता अभियान चलाओल जा रहल अछि। युवा व व्यवसायी लोकनि अपन कौशल कें डिजिटल माध्यम सँ विकसित कऽ सकैत छथि, जाहि सं हुनक पहुँच व्यापक बनैत अछि।

आधुनिक डिजिटल शिक्षण संसाधन आ कोर्स, मास्टरक्लास, वेबीनार आदि सँ मैथिली भाषाक श्रेष्ठता एवं रोजगारक अवसर मे विस्तार होइत जा रहल अछि। एहि सं भाषा संरक्षणक संगहि रोजगारक स्तर में वृद्धि होइत अछि। संगहि, डिजिटल आधार पर मैथिली भाषाक सामग्री उत्पादन आ वितरण करबाक अवसर सेहो उत्पन्न होइत अछि, जे सऽ व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँच संभव होएत अछि। एहि पेशा में सफलता हेतु आवश्यक अछि कि स्थानीय भाषा आ डिजिटल कौशलक संग सँध बैस हो।

उपसंहार में कहि सकै छी जे ऑनलाइन आ डिजिटल रोजगार मैथिली भाषाक संरक्षण, प्रचार आ आर्थिक समृद्धिक एक महत्वपूर्ण साधन बनि रहल अछि। एहि माध्यम सँ भाषा आ रोजगारक बीच उत्तम समन्वय स्थापित कऽ सकैत छी, जे स्थानीयकृअन्तरराष्ट्रीय स्तर पर मैथिली भाषा क' प्रतिष्ठा एवं रोजगारसंख्या बढ़ेबाक मार्ग प्रशस्त करैत अछि।

4. चुनौती आ समाधान

मैथिली भाषा संग रोजगारक क्षेत्र मे अनेक चुनौति विद्यमान अछि, जाहि क समाधान हेतु विभिन्न उपायक अवलंबन आवश्यक अछि। प्रमुख चुनौती अछि प्रशिक्षण आ कौशल विकासक अभाव। बहुत बेर स्थानीय रोजगारक लेल आवश्यक ज्ञान आ विशिष्ट कौशलक कमी होइत अछि, जाहि सँ युवा आइड छथि, हुनकर योग्यता एवं अवसरक अभाव होइत अछि। एहि समस्या कें समाधान करबाक लेल सरकारी आ निजी क्षेत्र मिलि क प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करि सकैत अछि, जतय युवा लोकनि के व्यावहारिक कौशल एवं नवीनतम प्रविधि सिखाओल जाय। संगहि, स्थानीय स्तर पर अध्ययन केन्द्र आ वर्कशॉपक आयोजन आवश्यक अछि जाहि सँ शिक्षा आ रोजगारक बीच कड़ी मजबूत भऽ सकै।

दूसर चुनौती अछि मानकीकरण आ स्थानिक रोजगार नीति के अभाव। बहुत बेर क्षेत्रविशेषक आवश्यकतानुसार रोजगार नीति नहि बनल होइत अछि, जकर कारण रोजगारक अवसर सीमित या अउरी असमानतापूर्ण बनि जाइत अछि। एहि मे सुधार के लेल नीति निर्मातासभ कें अंचलक विशेष आवश्यकतानुसार मानकीकरण आ स्पष्ट दिशानिर्देश बनय पड़त। स्थानीय मूलभूत संसाधन आ अवसररचना कें बेहतर बनाओल जाए, ताकि रोजगारक अधिक अवसर उपलब्ध होय।

तेसर, भाषा आ संचार के बाधा भी एक महत्वपूर्ण समस्या अछि। मैथिली के प्रयोजन एवं संचार में व्यावसायिकता आ दक्षता केर कमी बेरोकटोक बेरोजगारी आ क्षेत्रीय बाधा बनि रहल अछि। एहि समस्या कें समाधान हेतु उच्चस्तरीय भाषा प्रशिक्षण केन्द्रक स्थापना आवश्यक अछि, जाहि सँ युवा लोकनि के भाषा कौशल मजबूत बने। संगहि डिजिटल माध्यमक उपयोग कें प्रोत्साहन करि, लोकल स्तर पर संवाद आ सूचना के प्रवाह कें तेज कएल जाय।

वास्तव में, एतेक चुनौती के निराकरण हेतु समुचित नीति, प्रशिक्षण आ संसाधनक समन्वित प्रयोग आवश्यक अछि। एहि सँ न केवल रोजगार मे वृद्धि होयत, बल्कि मैथिली भाषाक संरक्षण एवं विकास सेहो संभव होयत। समस्या जतेक व्यापक, समाधान सेहो ततेक व्यवस्थित एवं सतत प्रयासक माध्यम प्राप्त कएल जा सकैत अछि।

4.1. प्रशिक्षण आ कौशल विकास

प्रशिक्षण आ कौशल विकास केर महत्व वर्तमान समय में अत्यधिक बढ़ि गेल अछि, विशेष कऽ जखन तकनीक आ व्यवसाय जगत तेजी सँ बदलि रहल अछि। मैथिली भाषाक क्षेत्र में रोजगार आधारित प्रशिक्षण केर अभाव देखि कऽ एहि दिशा में अग्रसर होयब अनिवार्य भऽ गेल अछि। एहि लेल विधिक, व्यवस्थित आ स्फूर्त कार्यक्रम केर आयोजन आवश्यक अछि ताकि स्थानीय युवा सभ केँ नवीनतम कौशल सिखेबाक अवसर भेटए। एहि में डिजिटल शिक्षा, कंप्यूटर कौशल, व्यवसाय संचालन, संवाद कौशल तथा भाषा प्रशिक्षण विशेष महत्व रखैत अछि, जे विभिन्न रोजगार क्षेत्र में प्रवास रोकब आ स्थानीय संसाधन केँ बेहतर बनाएब में सहायक होयत।

प्रशिक्षण केन्द्र सभक स्थापना आ समर्पित ट्यूटोरियल्सक संगठित कोर्सेज युवा लोकनि केँ रोजगारक लेल तैयार करबाक उद्देश्य सँ प्रारंभ कैल जाए। एहि कार्यक्रम में मातृभाषा मैथिली में प्रशिक्षण प्रदान करब, ताकि स्थानीय लोकनि केँ सहजता सँ समझ आ अपनाबय में सुविधा हो। संगहि, उद्यमिता क्षमता केँ बढ़ावा देब, ताकि व्यवसायिक अवसर आ स्वरोजगार विकसित होइक। एहि योजना केर अंतर्गत हुनर विकास केर संग-साथ स्वरोजगार आ स्वालंबन पर जोर देल जाए, जाहि सँ युवा आत्मनिर्भर बनि सकथिन।

एहि के अतिरिक्त, सरकार आ संस्थान सभक ओर सँ विशेष प्रशिक्षण योजनाक लागत आ संसाधन केर व्यवस्था करब आवश्यक अछि ताकि प्रशिक्षण केर पहुँच अखनहुँ अधिक सँ अधिक लोकनि तक पहुँचि सकए। ई सेहो सुनिश्चित करबाक चाही कि प्रशिक्षित अभ्यर्थी सभक लेल उचित रोजगार अवसर उपलब्ध होइक, ताकि हुनकर कौशल उपयोगी साबित होइक। निष्कर्षस्वरूप, प्रशिक्षण आ कौशल विकास केर समुचित व्यवस्था संगठित प्रयास केर परिणामस्वरूप, मैथिली भाषाक युवा सभ के रोजगारक क्षेत्र में बेहतर अवसर प्राप्त होयत, जकर प्रभाव सम्पूर्ण क्षेत्रक आर्थिक आ सामाजिक विकास पर पड़त।

4.2. मानकीकरण आ स्थानिक रोजगार नीति

मानकीकरण आ स्थानिक रोजगार नीति केर विकासमे स्थिरता आ प्रभावकारीता केर सुनिश्चित करब अत्यंत आवश्यक अछि। ई नीति कए बनाबेनाइ आ प्रावधानसभ केर कार्यान्वयन क्षेत्रीय आवश्यकता, संसाधन आ सामाजिक परिवेशक अनुरूप होयबाक चाही, जाहिसँ मैथिली भाषाक प्रयोग अत्यधिक होयत आ रोजगारक अवसर सेहो वृत्मानतः बढ़ि सकैत अछि। स्थानिक रोजगार नीति मे मुख्य रूप सँ लोकल व्यवसाय, हस्तकला, कृषि आ परंपरिक उद्योगसभ केँ संरक्षण आ संवर्द्धन पर ध्यान देल जाइत अछि। एहि नीति केर निर्माणमे स्थानीय जनता एवं विशेषज्ञसभक परामर्श लेल जाए, जाहि सँ नीति व्यापक आ व्यवहारिक होयत।

एहि दिशामे सरकारक योजनाबद्ध प्रयासक आवश्यकता अछि, जवनेमे मैथिली भाषाक प्रयोग केँ बढ़ावा देब, स्थानिक निवेशक समावेशी कार्यक्रम चलायब तथा स्थानीय प्रतिभा केँ प्रोत्साहित करब शामिल अछि। नीति केर क्रियान्वयनद्वारा, स्थानीय स्तर पर रोजगारक सृजन होयत आ परंपरागत कला, हस्तकला आदि उद्योगसभ केँ संरक्षण भेटत, जइसँ निरंतरता आ वृद्धिक संभावना बनत। संगहि, प्रशिक्षण आ कौशल विकास केंद्रसभ के स्थापना एवं सशक्तिकरण आवश्यक अछि, जाहि सँ युवा आ हुनरमंद लोकल व्यक्तिसभ अपन योग्यतानुसार रोजगारक अवसर हासिल कर सकैत छथि।

साथहि, मानकीकरण केर प्रक्रिया केर माध्यम सँ रोजगार मे मानक स्थापित होइत अछि, जे व्यवसायिकता आ गुणवत्ता केर प्रमाणिकरण सुनिश्चित करैत अछि। ई मानकीकरण व्यवसायक सिद्धता व प्रसिद्धि बढ़बैत अछि, जाहि सँ उत्पाद आ सेवा दुनू के बाजार मे प्रतिस्पर्धात्मकता प्राप्त होइत अछि। एहि प्रक्रिया मे मैथिली भाषा केर प्रयोग आ प्रचारक भी विशेष ध्यान दीयक चाही, जइसँ भाषा केर गरिमा बनल रहय।

सामाजिक आ आर्थिक व्यवस्था केर संयुक्त प्रभाव सँ, स्थानिक रोजगार नीति केर सतत विकास आ सुधार आवश्यक अछि। एहि दिशा मे सरकारी, सामाजिक आ व्यक्तिगत स्तर पर समन्वय स्थापित करब, मैथिली भाषाक समुचित प्रयोग आ रोजगार के अवसर बढ़ेबाक दिशा मे एक सशक्त कदम ठहरत। एहि प्रकार, क्षेत्रीय विशिष्टता आ भाषा केर संरक्षण संग ही, रोजगार केर स्थिरता आ समावेशन सुनिश्चित होयत।

4.3. भाषा आ संचार के बाधा

भाषा आ संचार के बाधा इमतरति क्षेत्र मे वाचाल संवाद आ समुचित जानकारी प्रेषण मे मुख्य बाधा केर रूप मे उभरि रहल अछि। अधिकांश संस्थान आ उद्योग मे कर्मचारी आ ग्राहक बीच सहज संप्रेषण के अभाव देखल जाइत अछि, जाहिसँ कार्यक्षमता आ उत्पादकता पर नकारात्मक प्रभाव परैत अछि। विशेष रूप सँ, भाषा के

विविधता आ स्थानीय बोलीक प्रयोग के कारण स्थापित मानक केँ पालन करब कठिन होइत छै। एहि समस्या सँ निपटय लेल आवश्यक अछि कि संवाद हेतु स्पष्ट आ मानकीकृत भाषा केर उपयोग केर प्रोत्साहन होय।

संगहि, शिक्षण संस्थान आ प्रशिक्षण केंद्र सभमें भाषा प्रशिक्षण सभक व्यवस्था जरूरी अछि ताकि स्तर पर संवाद कौशल में सुधार हो सके। डिजिटल माध्यमक उपयोग सँ सेहो संचार के सरलता बढ़ा सकैत अछि, मुदा एहि हेतु आवश्यक अछि कि डिजिटल साक्षरता पर सेहो ध्यान देल जाय। रोजगार के क्षेत्र में भाषा के अभाव आ संचार के बाधा सऽ निपटय लेल स्थानीय नीति आ कार्यशैली में सुधार जरूरी अछि, जकर अंतर्गत स्थानीय भाषा में प्रशिक्षण, मानकीकरण आ जागरूकता कार्यक्रम के प्रावधान हो।

एहि के अतिरिक्त, भाषाई विविधता के सम्मान करैत उचित मानकीकरण आ स्थानीय आवश्यकतानुसार संवाद व्यवस्था स्थापित करब, विश्वसनीयता आ समावेशन में वृद्धि करत। निष्कर्षस्वरूप, भाषा आ संचार संबंधी बाधा के समुचित पहचान आ समाधान पारदर्शिता, भागीदारी आ समावेशिता के आधार पर ही सुनिश्चित कयल जा सकैत अछि। एहि लेल निरंतर प्रयास आ समर्पित रणनीति आवश्यक अछि, जाहिसँ मैथिली भाषा केर रोजगार क्षेत्र में स्थाई स्थिति बनि सकय।

5. उदाहरण आ सफल मॉडल

अनेको स्थान पर मैथिली भाषाक उपयोग सँ रोजगार के सृजन भऽ रहल अछि। झारखंड केर रामपुर गाम में एक युवकक उदाहरण देखि सकैत छी, जकरा मैथिली में डिजिटल सामग्री निर्माणक लेल प्रशिक्षण देल गेल। ओ आब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर मैथिली भाषाक प्रसार करैत छथि आ सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन करैत छथि, जाहि सँ स्थानीय हस्तकला आ परंपरागत गीत-गाना के प्रचार-प्रसार होत अछि। एहि तरहें, भाषाक संरक्षण आ रोजगार मे सँ एगो सफल मॉडल बनि सकैत अछि।

दोसर उदाहरण अछि बिहार केर मधुबनी जिला मे स्थापित एक शिक्षा केंद्र, जे मैथिली में तकनीकी शिक्षा प्रदान करैत अछि। एहि केंद्र द्वारा विद्यार्थी लोकनि केँ स्थानीय भाषा में कौशल विकासक अवसर भेटैत अछि। एहि प्रयास सँ विद्यार्थी लोकनि रोजगार के अवसर बढ़ैत अछि आ स्थानीय भाषा के संरक्षण सेहो होइत अछि। एहि प्रकारक मॉडल स्थापित करबाक उद्देश्य भाषा आ रोजगार के पारस्परिक संबंध मजबूत करब अछि।

साथहि, मिथिलाक सांस्कृतिक संस्था षमैथिला संस्कृतिक मंच केर सफल प्रयास देखल जा सकैत अछि। एहि मंच द्वारा मैथिली भाषाक साहित्य, कला आ संगीत केँ डिजिटल माध्यम सँ प्रसारित कएल जाइत अछि, जे लोक केँ जागरूकता बढ़बैत अछि आ रोजगारोन्मुख कार्य में मदद करैत अछि। एहि प्रयास सँ कलाकार आ लेखक लोकनि केँ आर्थिक समर्थन भेटैत अछि, संगहि हुनक काजक पहचान बढ़ैत अछि।

एहि सब उदाहरण सँ स्पष्ट अछि जे उचित प्रशिक्षण, स्थानीय संसाधन केर उपयोग आ डिजिटल माध्यमक सहारा लैत मैथिली भाषाक संरक्षण आ रोजगार मे वृद्धि संभव अछि। एहि तरहक सफल मॉडल अपनय्योँ टा-टू टा नहि बल्कि व्यापक स्तर पर अपनायल जाए, जे सँ भाषा आ रोजगारक बीच मजबूत संबंध बनि सकैत अछि। एहि प्रयास सँ मैथिली भाषाक समृद्धि आ रोजगारक स्थिरता सुनिश्चित भऽ सकैत अछि।

6. नीति सुझाव

नैतिक आ रणनीतिक दृष्टिकोण सं मैथिली भाषा के समुचित विकास आ रोजगार के अवसर सुनिश्चित करब आवश्यक अछि। सबसे पहिने, नीति निर्माण में मैथिली के साहित्यिक, शैक्षिक एवं व्यावसायिक उपयोग के प्रवर्धन करना चाहिए। स्थानीय स्तर पर प्रभारी अधिकारी सभक सक्रिय भागीदारी सं, भाषा के सुदृढीकरण हेतु मानकीकरण आ स्थानिक रोजगार नीति के पालन जरूरी अछि। सरकारी आ गैर-सरकारी संस्थान सभक मिलकाज सं, मैथिली में शिक्षण सामग्री, प्रशिक्षण कार्यक्रम आ डिजिटल माध्यमक प्रचार-प्रसार के शुरुआत होयत। एहि माध्यम से युवा वर्ग के कौशल विकास आ रोजगार अवसर में वृद्धि होयत, संगहि भाषा के संरक्षण भी सुनिश्चित हेतय। अपन क्षेत्रीय भाषाक प्रयोग कऽ लोकल व्यवसाय, हस्तशिल्प, कृषि आ पर्यटन उद्योग के विस्तार करब आवश्यक अछि। साथहि, उद्यमिता के प्रोत्साहन, अनुदान आ सब्सिडी योजना सं नवोदित व्यवसायी के प्रोत्साहन देल जाय। मीडिया आ मनोरंजन क्षेत्र में मैथिली के प्रोत्साहन हेतु प्रासंगिक कार्यक्रमक आयोजन, रेडियो, टीवी आ सोशल मीडिया के उपयोग के माध्यम संप्रेषण करब। शिक्षण आ प्रशासनिक प्रक्रिया में मैथिली के प्रयोग के सुनिश्चित करक लेल कार्यशाला, सेमिनार आ जागरूकता अभियान चलायल जाय। एहि सब उपाय सं भाषा के उपयोगिता व रोजगार के अवसरचर्चा मजबूत होयत, साथहि युवा वर्ग के आत्मनिर्भरता

आ क्षेत्रीय विकास के दिशा में अग्रसरित होयत।

7. निष्कर्ष

मैथिली भाषा के विकास आ स्थानीय रोजगार सृजन में एक-दूसरा गहिर संबंध अछि। एहि भाषाक संरक्षण, प्रचार-प्रसार आ प्रयोगसहित संपूर्ण क्षेत्र में यसको उपयोगिता बढ़ैत जा रहल अछि। रोजगार के परिप्रेक्ष्य में देखल जाए तँ मैथिली भाषिक समुदाय के समर्पित प्रशिक्षण आ कौशल विकास कार्यक्रम द्वारा अनेक अवसर उत्पन्न होइछ। नौका साथ, स्थानीय भाषा के आधार पर रोजगार नीति बनौने जा रहल अछि, जकर सुदृढीकरण आवश्यक अछि। एहि संदर्भ में मानकीकरण आ स्थानीय आवश्यकताक ध्यान में रखने संग, रोजगार के विभिन्न क्षेत्र में मैथिली के प्रयोग सुदृढ होइत जायत। आधुनिक समय में डिजिटल आ ऑनलाइन रोजगार के क्षेत्र में मैथिली भाषा के उपयोग बढ़बाक संदर्भ में अनेक पहलु देखल जायत। एहि माध्यम द्वारा वेबसाइट, सोशल मीडिया, आ ई-शिक्षा के क्षेत्र में मैथिली के अपन प्रभाव बढ़त जायत। मुदा, एकर सफलता लेल प्रशिक्षण, उचित मानकीकरण आ भाषा के उपयुक्त प्रचार आवश्यक अछि। एहि क्रम में, सफल मॉडल के संचालन संग संग सरकारी आ गैरसरकारी प्रयास महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहल अछि। एहि प्रयास के तहत विभिन्न संस्थान आ स्थानीय निकाय मैथिली भाषा में रोजगार सृजन हेतु नवाचार प्रोत्साहित करैत छथि।

संक्षेप में कहब त, मैथिली भाषा के सशक्त उपयोग आ संरक्षण सुनिश्चित करैत, रोजगार के विभिन्न ढाँचामें व्यापक विकास सम्भव अछि। एहि सन्दर्भ में नीति निर्माता, शिक्षाविद् आ समुदाय के समर्पित प्रयास आवश्यक अछि। यस कारण, भाषा के प्रति सम्मान आ आदर के संगे, नवीनतम डिजिटल मंच के प्रयोग करैत रोजगार के अवसर बढ़ेबाक दिशा में सक्रिय प्रयास किए जाउ। एहि तरहें, मैथिली भाषाक समृद्धि संग समाजक आर्थिक व सांस्कृतिक प्रगति सुनिश्चित होयत।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ सूची—

1. क्रिस्टल, डेविड. (2006). लैंग्वेज एंड द इंटरनेट (द्वितीय संस्करण). कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. ग्रियर्सन, जॉर्ज एब्राहम. (2025). एन इंट्रोडक्शन टू द मैथिली डायलैक्ट ऑफ द बिहारी लैंग्वेज ऐज स्पोकन इन नॉर्थ बिहार. क्रिएटिव मीडिया पार्टनर्स।
3. झा, गंगानन्द. (2008). मैथिली भाषा का विकासरू मैथिली भाषा का भाषावैज्ञानिक अध्ययन. बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
4. झा, मनोज कुमार. (2018). लैंग्वेज पॉलिटिक्स एंड पब्लिक स्फेयर इन नॉर्थ इंडियारू मेकिंग ऑफ द मैथिली मूवमेंट. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. झा, शैलेन्द्र. (1995). फॉर्मेशन ऑफ द मैथिली लैंग्वेज. मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स।
6. जुराफस्की, डैनियल एवं मार्टिन, जेम्स एच. (2024). स्पीच एंड लैंग्वेज प्रोसेसिंग (तृतीय संस्करण). पियर्सन।
7. मैनिंग, क्रिस्टोफर डी. एवं शुट्ज़े, हिनरिख. (1999). फाउंडेशन ऑफ स्टैटिस्टिकल नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग. एमआईटी प्रेस।
8. मिश्र, जयकान्त. (1949). अ हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर (अर्ली एंड मिडिल पीरियड्स). मिथिला रिसर्च इंस्टीट्यूट।
9. राही, रंजीत; पुष्प, संजय; खान, आरिफ एवं सिन्हा, संजय कुमार. (2020). "मैथिली भाषा का सीमित अवस्था रूपांतरण (Finite State Transducer) आधारित रूपात्मक विश्लेषक।"

10. यूनेस्को. (2023). ग्लोबल रिपोर्ट ऑन मल्टीलिंग्वलिज्म एंड डिजिटल टेक्नोलॉजीज़. यूनेस्को पब्लिशिंग।
11. विद्यापति. (2008). विद्यापति पदावली. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्।
12. चौधरी, राधाकृष्ण. (2010). ए सर्वे ऑफ मैथिली लिटरेचर. शारदा पब्लिशिंग हाउस।
13. झा, देवकान्त. (2012). अ हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न मैथिली लिटरेचररू पोस्ट-इंडिपेंडेंस पीरियड. वैनगार्ड बुक्स।
14. झा, शक्तिधर. (1986). मैथिलीक स्वरूप विधान. मैथिली अकादमी, पटना।
15. पटना विश्वविद्यालय. (2026). "मैथिली में राजनीतिक एवं पारंपरिक शब्दावली का मानकीकरण तथा उसकी शैक्षिक प्रासंगिकता।" टाइम्स ऑफ इंडिया।

Cite this Article-

"डॉ. स्वीटी कुमारी", 'मैथिली भाषा आ रोजगार: एक विमर्श' Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:05, December 2024.

Journal URL- <https://www.researchvidyapith.com/>

DOI- 10.70650/rvimj.2024v1i50014

Published Date- 13 December 2024